

राजस्थान का विकास इंजन: हिंदुस्तान जिंक द्वारा सतत विकास की दिशा में कदम

(16740 बार पढ़ी गयी)

Published on : 09 Jan, 25 16:01

भारत के सबसे बड़े और एकमात्र एकीकृत जिंक, लेड और सिल्वर उत्पादक हिंदुस्तान जिंक (NSE: HINDZINC) ने अपने संचालन के 59 गौरवशाली वर्ष पूरे कर लिए हैं। 1966 में एक सार्वजनिक उपक्रम के रूप में स्थापित हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड ने देश और दुनिया को जिंक उपलब्ध कराते हुए अपार प्रगति की है। एक पूर्ण रूप से एकीकृत उत्पादक के रूप में, कंपनी राजस्थान में भूमिगत जिंक-लेड खदानों, स्मेल्टर और कैप्टिव पावर प्लांट्स का संचालन करती है।



1966 में उदयपुर में 18,000 टन प्रतिवर्ष क्षमता वाले स्मेल्टर के साथ शुरू हुई हिंदुस्तान जिंक की यात्रा, भारत के विकास की कहानी में प्रमुख भूमिका निभाने के उद्देश्य से की गई थी। सरकारी विनिवेश तक, कंपनी की उत्पादन क्षमता लगभग 2 लाख टन प्रतिवर्ष तक बढ़ी। 2002 में सरकारी विनिवेश और वेदांता समूह द्वारा अधिग्रहण के बाद, यह उत्पादन 4 गुना बढ़कर 1 मिलियन टन प्रतिवर्ष से अधिक हो गया।

वेदांता के नेतृत्व में, हिंदुस्तान जिंक ने न केवल राजस्थान के आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, बल्कि वैश्विक धातु और खनन उद्योग में अपनी पहचान बनाई है। सामुदायिक विकास, कर योगदान और आर्थिक समृद्धि में रणनीतिक निवेश के माध्यम से, कंपनी ने राजस्थान को खनन के साथ-साथ खेल, कृषि और सतत विकास का केंद्र बनाने में अहम भूमिका निभाई है। हिंदुस्तान जिंक को लगातार दूसरे वर्ष एस&एंडपी ग्लोबल कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट द्वारा दुनिया की सबसे सतत धातु और खनन कंपनी का दर्जा दिया गया है।

राजस्थान, खनिजों और धातुओं की भूमि, जिंक और सिल्वर की चमक के साथ वैश्विक धातु निर्माण के मानचित्र पर उभरा है। केवल धातु ही नहीं, बल्कि हिंदुस्तान जिंक की सामुदायिक पहलों के माध्यम से कृषि, साक्षरता दर और युवाओं के कौशल विकास में भी उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले हैं। हिंदुस्तान जिंक द्वारा संचालित 5 जिंक और लेड खदानों और 3 स्मेल्टरों ने पिछले दो दशकों में राजस्थान को 40,000 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व करों के माध्यम से दिया है। यह प्रति दिन लगभग 5 करोड़ रुपये का योगदान राज्य के खजाने में करता है। साथ ही, कंपनी ने छह जिलों में 3,700 गांवों के लिए 1,700 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया है, जिससे लगभग 20 लाख लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है।

हिंदुस्तान जिंक ने शिक्षा और कौशल विकास को सामुदायिक उत्थान के प्रमुख स्तंभों के रूप में प्राथमिकता दी है। राज्य में कक्षा 10वीं के पास प्रतिशत में 2007 के 45% से 2024 में 93% तक का उल्लेखनीय सुधार देखा गया है, जिसमें कंपनी की शिक्षा पर केंद्रित सामाजिक पहल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2008 से शुरू की गई शिक्षा संबल पहल के माध्यम से हर साल 2 लाख से अधिक बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

खेल के क्षेत्र में, ज़ावर स्थित भारत की सबसे उन्नत फुटबॉल अकादमी के माध्यम से हिंदुस्तान जिंक ने 2018 से अब तक 8,000 से अधिक प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रशिक्षित किया है।

कभी बंजर भूमि माने जाने वाले राजस्थान में अब गाजर, स्ट्रॉबेरी जैसे फल उगाए जा रहे हैं, जो हिंदुस्तान जिंक की कृषि-केंद्रित पहल समाधान का परिणाम है। समाधान पहल के तहत किसानों ने 5 करोड़ रुपये का राजस्व उत्पन्न किया है। इसके अतिरिक्त, कंपनी ने एक श्वेत क्रांति भी शुरू की है, जिसमें 4 लाख लीटर से अधिक दूध का प्रसंस्करण किया गया है और 2.5 करोड़ रुपये की आय अर्जित की गई है।

राजस्व और सामुदायिक विकास के अलावा, हिंदुस्तान जिंक ने अपने शेयरधारकों को मजबूत वित्तीय लाभ प्रदान किए हैं। कंपनी के शेयर का ऐतिहासिक उच्चतम मूल्य ₹807.70 और 7.79% का लाभांश यील्ड इसके वित्तीय प्रदर्शन को दर्शाते हैं।

हिंदुस्तान जिंक की विकास की बहुआयामी दृष्टि विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव छोड़ते हुए राजस्थान में सतत विकास को बढ़ावा देती है। आर्थिक समृद्धि को सामाजिक जिम्मेदारी के साथ जोड़कर, कंपनी ने राजस्थान को वैश्विक खनिज और धातु केंद्र बनाने के साथ-साथ खेल, कृषि और सामुदायिक कल्याण का एक आदर्श भविष्य बनाने में मदद की है।

जैसे-जैसे हिंदुस्तान जिंक की यह यात्रा आगे बढ़ रही है, राज्य एक समग्र विकास मॉडल बनने की ओर अग्रसर है। खनन गढ़ से एक विविध अर्थव्यवस्था तक का यह सफर हिंदुस्तान जिंक की रणनीतिक सोच और राजस्थान के प्रति इसकी स्थायी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

साभार :

© CopyRight Pressnote.in | A Avid Web Solutions Venture.